अध्याय - पंचम
विवेचन, निष्कर्ष, सुझाव
एवं
भावी शोध हेतु समस्यायें

अध्याय – पंचम

विवेचन : निष्कर्ष : सुझाव भावी शोध हेतु सुझाव

विवेचन ·

सन् 1950 मे भारत को गणराज्य घोषित किया गया तथा यह तय किया गया कि 6 से 14 वर्ष के बालको को नि शुल्क अनिवार्य शिक्षा हो जाना चाहिए । प्राथमिक शिक्षा कोदेश की आधार शिला कहा गया है । प्राथमिक शिक्षा की समस्या शहरी क्षेत्रो की शासकीय शालाओ मे भी गभीर समस्याहै ।

शिक्षा प्रणाली की सफलता का एक प्रभावशाली सूचक विद्यालय मे बच्चों द्वारा अधिगम के सुनिर्धारित स्तरो की सप्राप्ति है । इसी सदर्भ मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) मे विद्यालय के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरो के निर्धारण को शिक्षक के निष्पादन लक्ष्यो के निर्धारण की पूर्व अपेक्षा मानकर, उसकी आवश्यकता पर बल दिया गया है । प्रथम अध्याय मे इसी पृष्ठ भूमि का विवेचन है ।

इसी अध्ययन के अतर्गत समस्या कथन, शोध के प्रमुख लक्ष्य एव परिकल्पनाओ का विवरण प्रस्तुत किया गया है । सभी परिकल्पनाओ का विवरण किया गया है । सभी परिकल्पनओा को पाच खडो मे विभाजित किया है । प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित विषय का चयन किया –

"कक्षा पाच के आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियो के गणित और असज्ञानात्मक क्षेत्र मे न्यूनतम अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन ।"

समस्या का निष्कर्ष देने से पहले यह स्पष्ट करना उचित होगा कि यह निष्कर्ष अतिम नही है क्योकि यह एक लघु शोध प्रबध है जिसका अध्ययन शहडोल जिले के दो ग्रामीण व एक नगरीय शाला तक ही सीमित है ।

शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय मे प्रदत्तो का विश्लेषण और परिकल्पनाओ का परीक्षण किया गया । इससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे –

1 कक्षा पाच के आदिवासी समूह मे क्षेत्र-1 मे छात्राओ का न्यूनतम अधिगम स्तर छात्रो से अधिक पाया गया ।

2 गैर आदिवासी समूह मे क्षेत्र-1 मे छात्रो का न्यूनतम अधिगम स्तर छात्राओ से अधिक पाया गया ।

3 गणित के क्षेत्र-1 मे गैर आदिवासी समूह के छात्रो का न्यूनतम अधिगम स्तर आदिवासी समूह के छात्रो से अधिक पाया गया ।

4 गणित के क्षेत्र-1 मे गैर आदिवासी समूह की छात्राओ का न्यूनतम अधिगम स्तर आदिवासी समूह के छात्रो से अधिक पाया गया ।

5 कक्षा पाच के आदिवासी समूह मे क्षेत्र-2 मे छात्रओ का न्यूनतम अधिगम स्तर छात्रो से अधिक पाया गया ।

6 गैर आदिवासी समूह मे क्षेत्र 2 मे छात्र व छात्राओ का न्यूनतम अधिगम स्तर लगभग बराबर पाया गया ।

7 गणित मे क्षेत्र-2 मे गैर आदिवासी समूह के छात्रो का न्यूनतम अधिगम स्तर आदिवासी समूह के छात्रो से अधिक पाया गया ।

8 गणित मे क्षेत्र-2 मे गैर आदिवासी समूह की छात्राओ का न्यूनतम अधिगम स्तर आदिवासी समूह के छात्राओ से अधिक पाया गया।

9 अभाज्य सख्याओ को छॉटकर लिखना इस प्रश्न को मात्र 04 विद्यार्थियो ने हल किया ।

10 गणित विषय मे क्षेत्र-2 (मूलभूत योग्यता) मे सार्थक अतर पाया गया । जबकि पूर्व मे हनीफ (1992) द्वारा किये गये अध्ययन मे गणित विषय की "मूलभूत योग्यता" मे कोई सार्थक अतर नही पाया गया ।

हनीफ द्वारा किये गये अध्ययन मे लिया गया प्रतिदर्श भोपाल शहर केवल एक विद्यालय तक सीमित था जबकि शोधकर्ता का प्रतिदर्श शहडोल जिले के आदिवासी क्षेत्र से लिया गया था । अत परिणामो मे भिन्नता सभव है ।

आदिवासी क्षेत्र की शालाओ के विद्यार्थियों में न्यूनतम अधिगम स्तर कम होने के कारण .

शोधकर्ता ने अपने लघु शोध प्रबध आदिवासी क्षेत्र मे स्थित शालाओ कक्षा पाच के विद्यार्थियो का गणित विषय मे न्यूनतम अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह पाया कि शहडोल जिले के अतर्गत आने वाले गावो की प्राथमिक शालाये आज भी पिछडी हुई अवस्था मे है जबकि सरकार आदिवासी क्षेत्र की उन्नति हेतु काफी प्रयास कर रही है । वहॉ के विद्यार्थियो का न्यूनतम अधिगम स्तर बहुत कम है ऐसा क्यो ? इसके निम्न कारण हो सकते है । शोध निष्कर्ष के पश्चात प्रमुख कारणो का अनुमान इस प्रकार है –

1 इस क्षेत्र की प्राथमिक शालाओ के शिक्षको को मूल्याकन की नवीन परिधि व पूर्व दक्षताओ का ज्ञान नही है, वे अब भी परपरागत ढग से शिक्षण कार्य करते है ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

2 आदिवासी अभिभावक के पढे लिखे न होने के कारण अपने बच्चो को पढाई की ओर प्रेरित नही करते ।

3 प्रचलित पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तको की विषय वस्तु शहरी कृत मानसिकता से लिखी गई है ये आदिवासी क्षेत्रो की आवश्यकताओ को पूरा नही करती ।

4 पाठ्यक्रम का बोझिल,नीरस व उबाऊपन भी छात्रो के सीखने मे बाधक है ।

5 आदिवासी समुदाय अपने पुराने व्यवसाय जैसे कृषि करना, फसल काटना, महुआ बीनना, तेदुपत्ता तोडना, किसी व्यापारी के यहाँ नौकरी करना, साइकिल सर्विसिग का कार्य आदि कार्यो मे सलग्न होते है इस कारण बच्चे परिवार के छोटे बच्चो की देखभाल करते है इस कारण वे शाला मे ढग से अध्ययन नही कर पाते ।

6 आदिवासी बालक रेल को नही समझते न वे जानते यह क्या चीज होती है ।

7 इन शालाओ मे शिक्षण की न्यूनतम भौतिक सुविधाओ का अभाव है ।

8 शिक्षको को शिक्षा जगत मे होने वाले नवीन परिवर्तनो का ज्ञान नही है ।

9 शिक्षक ओ बी किट का उपयोग नही करते तथा कई स्कूलो को ओ बी किट प्राप्त नही हुआ ।

10 इस क्षेत्र की शालाओ मे प्रशिक्षित शिक्षक व शिक्षिकाओ का अभाव है ।

11 शिक्षक असज्ञानात्मक क्षेत्र से सबधित जानकारी विद्यार्थियो को बिल्कुल नही देते।

12 इन क्षेत्रो मे विकास की गति धीमी होने के कारण शिक्षा का स्तर पिछडा हुआ है ।

इस प्रकार उपरोक्त सभी कारण बालक के अपेक्षित अधिगम स्तर को ग्रहण करने मे बाधक है । न्यूनतम अधिगम स्तर की अवधारणा पाठ्यक्रमो, दक्षताओ व मूल्याकन प्रणाली का पुन सशोधन आवश्यक है तब कही जाकर ये अपेक्षित स्तर बालक ग्रहण कर पायेगे ।

सुझाव

शिक्षा मे गुणवत्ता को ध्यान मे रखते हुये न्यूनतम अधिगम स्तर प्राथमिक कक्षा के लिये निर्धारित किये गये थे किंतु उनकी सप्राप्ति अब तक सभव नही हो पायी है जिनके कई कारण है अत इन कारणो को दूर करना होगा । इस शोध के निष्कर्ष के आधार पर शोधकर्ता द्वारा निम्न सुझाव प्रस्तावित है –

1 आदिवासी क्षेत्र के छात्र छात्राओ के लिये उनके अनुभवो एव क्रियाओ को शामिल करते हुये उनके क्षेत्र के अनुरूप सास्कृतिक आर्थिक पारिवारिक आवश्यकताओ पर आधारित पाठ्यक्रम का निर्माण करके शिक्षा दी जानी चाहिये ।

2 गणित सबधी आधुनिक सुविधाये, नक्शा, चार्ट, माडल स्कूलो को उपलब्ध कराया जाये ।

3 आदिवासी क्षेत्र मे शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की जाये ।

4 असज्ञानात्मक क्षेत्र (समयनिष्ठा और नियमितता, सत्यनिष्ठा सहकारिता और अध्यवसायिता/कर्मठता) के बारे मे ज्ञान देने के लिए एक अलग से कालखड लगना चाहिए ।

5 गणित मे क्षेत्र–3 (मुद्रा, भार, लबाई, धारिता) तथा क्षेत्र-4 (भिन्न, दशमलव, प्रतिशत) मे विद्यार्थियो के परिणाम शून्य रहे है । अत इस तरफ शिक्षको को शुरू से ही बच्चो को विशेष ध्यान देते हुए रूचि पूर्वक पढाना चाहिए ।

6 गणित मे क्षेत्र–3 (मुद्रा, भार, लबाई, धारिता) तथा क्षेत्र–4 (भिन्न दशमलव, प्रतिशत) को विशेष शिक्षण सामग्री का उपयोग करके पढाया जाना चाहिए ।

7 शासन द्वारा शाला भवनो, शिक्षण सामग्री एव आवश्यक न्यूनतम सुविधाये उपलब्ध करायी जानी चाहिए ।

8 कक्षा का वातावरण उचित होना चाहिए ।

9 छात्रो को आरोही तथा अवरोही क्रम मे सख्याओ को लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए ।

10 विद्यार्थियो को अभाज्य सख्याओ तथा भाज्य सख्याओ के बारे मे भली भाँति उदाहरण सहित समझाना आवश्यक है ।

11 जिन सवालो को भाषा लिखी होती है अर्थात अक गणित के सवालो मे विद्यार्थी यह नही जान पाते कि इसमे भाग,गुणा,जोड या घटाने की क्रिया करना है अत इसके लिये शिक्षको द्वारा सही आधारभूत ज्ञान दिये जाने की आवश्यकता है ।

12 अक गणित के सवालो को दैनिक जीवन से सबधित समस्याओ से सबधित कर पढाया जाना उचित होगा ।

13 गणित की मूलभूत योग्यताओ को जोड, घटाना, गुणा तथा भाग की साधारण समस्याओ का अभ्यास कराया जाना चाहिए ।

14 शब्दो मे लिखी सख्या को अको मे तथा अको मे लिखी सख्या को शब्दो मे लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए ।

15 शिक्षको को शिक्षा जगत के नवीन परिवर्तनो का ज्ञान कराने के लिये प्राथमिक शिक्षक तथा पलाश जैसे पत्रिकाये नि शुल्क उपलब्ध करायी जाना चाहिए ।

16 सज्ञानात्मक पक्ष के साथ साथ असज्ञानात्मक पक्ष पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है ।

17 प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण का अभ्यास कक्षाओ मे निर्धारित दक्षताओ के आधार पर कराया जाना चाहिये, जिससे छात्र निर्धारित न्यूनतम अधिगम स्तर को पा सके ।

18 ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड किट का उपयोग करने का प्रशिक्षण शिक्षको को दिया जाना चाहिए ।

19 यह अध्ययन तीन शालाओ तक सीमित है इसे व्यापक स्तर पर किया जाये ।

20 अध्यापको को क्रियात्मक अनुसधान का प्रशिक्षण दिया जाये जिससे वे अपनी समस्याओ को हल करने मे समर्थ हो सके ।

भावी शोध हेतु समस्याये ·

भावी शोध हेतु कुछ प्रमुख समस्याये हो सकती है जिन पर शोध किया जाना आवश्यक है –

1 प्राथमिक स्तर पर असज्ञानात्मक पक्ष का न्यूनतम अधिगम स्तर पर प्रभाव सबधी अध्ययन ।

2 ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की शालाओ मे न्यूनतम अधिगम स्तर मानदड निर्धारित करने सबधी अध्ययन ।

*